शैलपुत्री माता की कथा

एक बार जब प्रजापति ने यज्ञ किया तो उन्होंने भगवान शंकर को नहीं बल्कि सभी देवताओं को आमंत्रित किया। सती यज्ञ में जाने के लिए व्याकुल हो उठीं। शंकरजी ने कहा कि सभी देवताओं को आमंत्रित किया गया है, मुझे नहीं। ऐसे में वहां जाना उचित नहीं है।

सती का प्रबल आग्रह देखकर शंकरजी ने उन्हें यज्ञ में जाने की अनुमति दे दी। सती जब घर पहुंचीं तो मां ने ही उन्हें स्नेह दिया। बहनों की बातों में व्यंग्य और उपहास का भाव था। भगवान शंकर के प्रति भी तिरस्कार का भाव है। दक्ष ने भी उनके प्रति अपमानजनक शब्द कहे। इससे सती को संकट आ गया था।

वह अपने पति का यह अपमान सहन नहीं कर सकी और योगाग्नि द्वारा स्वयं को जलाकर भस्म कर लिया। इस महादु:ख से व्यथित होकर भगवान शंकर ने उस यज्ञ को नष्ट कर दिया। यही सती अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रूप में जन्मीं और शैलपुत्री कहलाईं।

पार्वती और हेमवती भी इसी देवी के अन्य नाम हैं। शैलपुत्री का विवाह भी भगवान शंकर से हुआ था। शैलपुत्री भगवान शिव की पत्नी बनीं। इनका महत्व और शक्ति अनंत है।

pdfinbox.com